JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में व्यावसायिक शिक्षा . एक समीक्षा

Dr.P.M. SHARMILA
ASSOCIATE PROFESSOR
GOVERNMENT FIRST GRADE COLLEGE
VIJAYNAGAR, BANGALORE-104
KARNATAKA

प्रस्तावना:

व्यावसायिक शिक्षा ;अंग्रेजी में टवबंजपवदंस स्कनबंजपवदद्ध में छात्रों को व्यापार के आधारभूत सिद्धान्तों तथा प्रक्रियाओं का शिक्षण किया जाता है। किसी देश के विकास में उस देश की शैक्षिक व्यवस्था का बहुत अत्यधिक महत्व होता हैं। तथा ऐसी शिक्षा एवं प्रशिक्षण से तात्पर्य है जो कार्यकर्ता को अपने कार्य मैंने निपुण बनाती है उदाहरण के लिए आईटीआई एवं पॉलिटेक्निक में दी जाने वाली शिक्षा है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को व्यवसाय दिलाना और उनको जीविकोपार्जन योग्य बनाना हो तो उस देश का विकास निश्चित होता हैं। शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्यों और लक्ष्यों की प्राप्ति तभी कर सकती हैं जब वह शिक्षा व्यावसायिक शिक्षा हो।

ये दुनिया हुनरदार लोगो को ही पूछती है। पहले माँ.बाप अपने बच्चों को डाक्टर इंजीनियर ही बनाना ही पसंद करते थेए क्योकि केवल इसी क्षेत्र में रोजगार के अवसर सुनिश्चित हुआ करते थेए लेकिन अब ऐसा नहीं है। प्रशिक्षण और कुशलता हमारे करियर रूपी ट्रेन का इंजन हैए जिसके बिना हमारी जिन्दगी की गाड़ी चल ही नहीं सकतीए इसलिए गर जीवन में आगे बढ़ना हैए सफल होना हैए स्कील्ड तो होना ही पड़ेगा।

किसी खास उद्यम के लिए लोगो को तैयार करना ही व्यवसायिक शिक्षा का परम उद्देश्य है। जिस प्रकार से हमारे देश की जनसंख्या बढ़ रही हैए उसे देखते हुए सबके लिए रोजगार उपलब्ध करा पाना सरकार के लिए लोहे के चने चबाने जैसा है। वोकेशनल शिक्षा किताबी पढ़ाई अर्थात थ्योरी पर कम प्रैक्टिकल ज्ञान पर अधिक फोकस करता है। छात्र किसी खास विषय के तकनीक या प्रोद्योगिकी पर महारत हासिल करते है।

मूलशब्दः व्यावसायिकए शिक्षाए रूपए भारतए छात्रों

परिचयरू

व्यावसायिक शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण ;वीईटीद्धए जिसे कैरियर और तकनीकी शिक्षा ;सीटीईद्ध भी कहा जाता हैए शिक्षार्थियों को उन नौकरियों के लिए तैयार करता है जो मैन्युअल या व्यावहारिक गतिविधियों पर आधारित हैंए पारंपरिक रूप से गैर.शैक्षणिक और पूरी तरह से एक विशिष्ट व्यापारए व्यवसाय या व्यवसाय से संबंधित हैं। इसलिए शब्दए जिसमें शिक्षार्थी भाग लेता है। इसे कभी.कभी तकनीकी शिक्षा के रूप में संदर्भित किया जाता हैए क्योंकि शिक्षार्थी सीधे तकनीकों या प्रौद्योगिकी के एक विशेष समूह में विशेषज्ञता विकसित करता है।

व्यावसायिक शिक्षा माध्यमिक या उत्तर.माध्यमिक स्तर पर हो सकती है और शिक्षुता प्रणाली के साथ बातचीत कर सकती है। तेजी सेए व्यावसायिक शिक्षा को पूर्व शिक्षा की मान्यता और तृतीयक शिक्षा के लिए आंशिक शैक्षणिक क्रेडिट ;जैसेए एक विश्वविद्यालय मेंद्ध क्रेडिट के रूप में मान्यता दी जा सकती हैय हालाँकिए उच्च शिक्षा की पारंपरिक परिभाषा के अंतर्गत आने के लिए इसे शायद ही कभी अपने रूप में माना जाता है।.

व्यवसायिक शिक्षा का महत्व

यह स्थिति तब और भी महत्वपूर्ण हो जाती हैए जब बात गरीबों की आती है। उनके पास इतने पैसे नही होते कि वो अपनी शिक्षा पूरी कर सकेए इस स्थिति में रोजगार पाने का एकमात्र साधन केवल और केवल व्यवसायिक शिक्षा ही रह जाती हैए जो बेहद कम खर्चे में लोगो को स्कील्ड कर रोजगार दिलाने में सहायक सिध्द होती है।

व्यावसायिक शिक्षा की विशेषता :

1ण यह छात्रों को समाज से जोड़ने और सामाजिक कार्यों में योगदान देने हेतु तैयार करती हैं।

2ण यह छात्रों को जीविकोपार्जन बनाने हेतु उनमें व्यावसायिक कौशल की प्रवृत्ति का विकास करती हैं।

3ण इसके द्वारा छात्रों को विद्यालयों में क्रियाशील रखा जाता हैं और इससे उनका शारीरिक विकास तीव्र गति से होता हैं।

4ण इससे वह अपने सामाजिक एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों से परिचित हो जाते हैं।

5ण व्यावसायिक शिक्षा द्वारा शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यो को मूर्त रूप प्रदान किया जाता हैं।

रोजगार पर प्रभाव

अब इस क्षेत्र मे भी आधुनिकता ने अपने पंख पसार लिए है। बहुत सारी कंपनियां भी प्रक्षिशित लोगो की तलाश में रहती हैए विभिन्न जॉब वेबसाइटो में कुशल लोगो की रिक्रूटमेंट निकलती रहती हैए जिसमें आन.लाइन आवेदन माँगे जाते है। कुछ प्रोफेशनल वेबसाइट अब आनलाइन कोर्सेज भी कराती है। अब आप घर बैठे ही ऐसे कोर्सेज कर सकते है। आपको कहीं जाने की जरूरत नही। सुदूर गाँव मे बैठे लोगो के लिए यह व्यवस्था किसी वरदान से कम नहीं।

व्यवसाय और कैरियर

1ण आम तौर परए व्यवसाय और करियर का परस्पर उपयोग किया जाता है। व्यावसायिक शिक्षा को प्रक्रियात्मक ज्ञान सिखाने के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। यह घोषणात्मक ज्ञान के विपरीत हो सकता हैए जैसा कि आमतौर पर व्यापक वैज्ञानिक क्षेत्र में शिक्षा में उपयोग किया जाता हैए जो सिद्धांत और अमूर्त वैचारिक ज्ञानए तृतीयक शिक्षा की विशेषता पर केंद्रित हो सकता है।

बीसवीं शताब्दी के अंत तकए व्यावसायिक शिक्षा विशिष्ट ट्रेडों पर केंद्रित थीए उदाहरण के लिएए एक ऑटोमोबाइल मैकेनिक या वेल्डरए और इसलिए निम्न सामाजिक वर्गों की गतिविधियों से जुड़ा था। परिणामस्वरूपए इसने कलंक के स्तर को आकर्षित किया। व्यावसायिक शिक्षा सीखने की सदियों पुरानी शिक्षुता प्रणाली से संबंधित है।

कौशल विकास पर अनिवार्य सीएसआर खर्चरू

कंपनी अधिनियमए 2013 के तहत अनिवार्य सीएसआर खर्च के कार्यान्वयन के बाद सेए भारत में निगमों ने विभिन्न सामाजिक परियोजनाओं में 100ए000 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश किया है।

कौशल और आजीविका सुधार परियोजनाओं पर लगभग 6ए877 करोड़ रुपये खर्च किए गए। शीर्ष पांच प्राप्तकर्ता महाराष्ट्रए तमिलनाडुए ओडिशाए कर्नाटक और गुजरात थे।

व्यावसायिक शिक्षा की विशेषता :

इस शिक्षा का आधार मनोवैज्ञानिक है। यह बालक की रुचिए प्रवृति एवं व्यक्तित्व का ध्यान रखती है। इस शिक्षा योजना में शिक्षक एवं पुस्तक के स्थान पर बालक को विशेष महत्व दिया जाता है।

जीवन से संवंधित.यह शिक्षा जीवन से संबंधित है। यह शिक्षा परिवारए श्रम तथा कार्य से संबंधित है।

इस शिक्षा का आधार व्यक्तित्व का विकास करना है।

व्यावसायिक शिक्षा एक विशिष्ट शिक्षा है।

व्यावसायिक शिक्षा का रुप स्थिर नहीं रहता है। समय की गति एवं सभ्यता के विकास के साथ इसके रुप में परिवर्तन आता है।

व्यावहारिक शिक्षा.यह शिक्षा एक व्यावहारिक शिक्षा है। यह शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान न प्रदान कर जीवन के हर क्षेत्र के लिए उपयोगी होती है। यही व्यावसायिक शिक्षा की विशेषता है।

व्यवसायिक शिक्षा के लाभ :

व्यवसायिक शिक्षाए ज्ञान और अनुभव से परिपूर्ण प्रशिक्षित प्रतिभा का सृजन करने का एक स्वच्छंदए स्थिर एवं अपरंपरागत माध्यम है। प्रशिक्षित छात्र इन कोर्सो को करके जमीनी स्तर पर हुनरमंद और काबिल बनते हैए और अपना अनुभव और काबिलियत अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में भी दिखाते है।

भारत सरकार द्वारा संचालित योजनाएँ:

भारत सरकार आर्थिक रूप से पिछड़े निर्धन वर्गों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देने के लिए कई योजनाएँ चला रही है। इन योजनाओं में से कुछ महत्वपूर्ण योजनाए अधोलिखित है.

1) उड़ान (UDAAN)

यह कार्यक्रम विशेषतः जम्मू और कश्मीर राज्य के लिए शुरू किया गया है। यह पाँच साल का कार्यक्रम और यह सूचना प्रौद्योगिकीए बीपीओ और खुदरा क्षेत्र में व्यावसायिक प्रशिक्षण शिक्षा और रोजगार मुहैय्या कराता है।

2) पॉलिटेक्निक

पॉलिटेक्निक भारत के लगभग सभी राज्यों में चलने वाला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान है। यह इंजीनियरिंग और कंप्यूटर विज्ञान के भिन्न.भिन्न विषयों में तीन वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित करता है। पॉलि.टेक्नीक की शिक्षा गांव.गांवए शहर.शहर में प्रचलित हैए जो जन.जन तक पहुंचकर छात्रो की राह आसान कर रही है।

3) औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान विभिन्न इंजीनियरिंग और गैर इंजीनियरिंग विषयों में व्यावसायिक प्रशिक्षण चलाते हैं। आईटीआई का प्रबंधन भारत सरकार के कौशल विकास एवं उद्यमिता द्वारा निर्देशित एवं कार्यान्वित होता है।

4) एनआरएलएम (राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन)

जून 2011 में लागू किया गयाए छत्स्ड को खास तौर पर ठच्स् ;गरीबी रेखा से नीचेद्ध समूह के लिए चलाया गया है। इसका उद्देश्य विभिन्न ट्रेडों में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगोए खासकर महिलाओं को भिन्न.भिन्न उद्यम एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना हैए ताकि वे खुद को क्रियाशील एवं रोजगारपरक बनाकरए अपनी और अपने परिवार की आजीविका कमा सके।

5) **शिल्पकार प्रशिक्षण योजना**

यह योजना विभिन्न इंजीनियरिंग विषयों के साथ.साथ पैरामेडिकलए कृषि और वाणिज्य आदि के क्षेत्र में व्यावसायिक प्रशिक्षण देने के लिए शुरू की गयी है। इसे व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण निदेशालय द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

भारत में व्यवसायिक शिक्षा की स्थिति रू

हमारा देश युवाओ का देश है। आज का परिदृश्य उठा के देखे तो बढ़ती हुई बेरोजगारी सर्वाधिक चिन्ता का विषय है। इसका निराकरण करना केवल सरकार की ही नही अपितु आम नागरिक का भी हैए और केवल तभी संबव है आम आदमी स्कील्ड होकर रोजगार का सृजन करे। सवा सौ करोड़ की आबादी वाला हमारा देश और सभी के लिए रोजगार उगा पाना सरकार के लिए भी नामुमकिन है। बेरोजगारी का अंत तभी संभव है जब आम आदमी अपना उद्यम स्वयम् सृजित करे और यह तभी हो सकता है हर हाथ हुनरमंद हो।

भारत में व्यावसायिक शिक्षा के अवसर रू

व्यावसायिक शिक्षा लोगों को औद्योगिक या व्यावसायिक रोजगार के लिए तैयार करने के लिए तैयार किए गए निर्देश का रूप है। यह औपचारिक रूप से व्यापार स्कूलोंए तकनीकी माध्यमिक विद्यालयोंए या ऑन.द.जॉब प्रशिक्षण कार्यक्रमों में या अधिक अनौपचारिक रूप सेए नौकरी पर आवश्यक कौशल चुनकर प्राप्त किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

पहले बड़े ही सीमित अवसर होते थेए रोजगार पाने के। कारपेन्ट्रीए वेल्डिंगए आटो.मोबाइल जैसे क्षेत्रो तक ही सीमित थेए लेकिन अब ऐसा नही है। बहुत सारे नये.नये क्षेत्रो का विकास हो गया हैए जैसे इवेंट मैनेजमेंटए टूरिस्ट मैनेजमेंटए होटल मैनेजमेंटए कम्प्यूटर नेटवर्क मैनेजमेंटए रिटेल ट्रेनिंग एण्ड मार्केटिंगए टूर एण्ड ट्रवेल्स मैनेजमेंट इत्यादि ऐसे कुछ क्षेत्र हैए जिसमे आप निपुण होकर बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते है। देश में बढ़ती बेरोजगारीए युवाओं में जन्मती दुष्प्रवृत्तियाँ तथा उनका असामाजिक कृत्यों की ओर झुकाव देश को अराजकता की ओर धधकेल रहा है। इसलिए अनिवार्य है कि हमारी शिक्षा का व्यवसाय के साथ सामंजस्य होए संतुलन हो। व्यवसायिक शिक्षाए ज्ञान और अनुभव से परिपूर्ण प्रशिक्षित प्रतिभा का सृजन करने का एक स्वच्छंदए स्थिर एवं अपरंपरागत माध्यम है। कुशल हाथ ही एक नये और बेहतर कल का रचयिता हो सकता है। जब हर हाथ मे हुनर होगाए तभी हमारा देश विकसित देशो की श्रेणी मे खड़ा हो पाएगा।

संदर्ब सूचि:

. www.dget.nic.in

. User manual for skill knowledge provider(skp)Applications.

. Registration By skill knowledge providers(skp) to provide hands on Training skills for vocational Education Programmes.

. व्यावसायिक शिक्षा के प्रारम्भिक सिद्धान्त : एस. सी. सक्सेना - S. C. Saxena

. व्यावसायिक शिक्षा निर्देशन :chaudhari,Rekha.